IJAER/ March-April 2024/Volume-13/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन के विविध आयाम

चन्द्रकान्त
व्याख्याता हिन्दी साहित्य
सर्वोदय महिला महाविद्यालय
बागीदौरा, जिला बांसवाडा (राज.)

रेणु हिन्दी के प्रथम कहानीकार है जो प्राणों में घुले हुए रंग' और 'मन के रंग' को अर्थात मनुष्य के राग–विराग और प्रेम को, दुख और करूणा को, हास–उल्लास तथा पीड़ा को अपनी कहानियों में एक साथ चित्रित किया है। 'आत्मा के शिल्पी के रूप में दिखाई पड़ते है। इसके साथ ही वे मनुष्य का चित्रण एक ठोस जमीन पर समय विशेष में करते हैं, किन्तु स्थानीयता अथवा भौगोलिक परिवेश और इतिहास की एक कालावधि में सांस लेते हुए पात्र सार्वदेशीक और सार्वकालीक जीवन के मर्म को भी उद्घाटित करते है।

यह कहा भी जाता है कि रेणु का महत्व आंचलिकता में नहीं अपितु उसके अतिक्रमण में है। रेणु की कहानियाँ अपनी बनावट या संरचना, स्वभाव या प्रकृति शिल्प और स्वाद में हिन्दी कहानी की परम्परा में एक पृथक और नयी–दिशा लेकर प्रस्तुत होती है। अन्ततः एक नयी धारा का सूत्रपात्र इनसे होता है। ये कहानियाँ प्रेमचन्द की जमीन पर होते हुए भी जितनी प्रेमचन्द की कहानियों से भिन्न है, उतनी ही। अपने समकालीन कथाकारों की कहानियों से रेणुकी कहानियों के सही मूल्यांकन के लिए एक नया सौन्दर्यशास्त्र सृजीत करने की आवश्यकता है। रेणु का मन सरसो की पोटली है। वे अपने कथा सुत्रों के रिक्त स्थानों को उसके तीन दानों से भरते है। ये तीन बिन्दियाँ यानि डॉट–डॉट–डॉट रेकी कहानियों की सूक्ष्म अन्तर्ध्वनियाँ है, यही है उनका कथाकार मन। ये आँखों को गड़ते नहीं बल्कि कथा के प्रवाह को मन्द नहीं होने देते। ये अपने भीतर रस की सम्पूर्ण सागर समेटे हुए है। रेणु की कहानियों का प्रत्येक शब्द प्रतिबद्धता के लिये है।

रेणु एक ऐसे कहानीकार है जो आजीवन शोषित, भूखे, नंगे, किसान एवं मजदूरों के लिए लड़ते रहे। सामन्तवाद और पूँजीवाद के विरूद्ध उनकी लेखनी सदा चलती रही। किसी विहारी विचारधारा को स्वीकार करने के बजाय, वे ऐसी ही विचारधारा को स्वीकार करते थे, जो इसी जमीन से पल्लवित और पुष्पित हुई हो। देश के बाहर के मोहक वारों में उनका विश्वास नहीं था। उपन्यासों के अतिरिक्त ग्रामीण जीवन पर आधारित कहानियों, जिनके नाम ऊपर दिये गये हैं, यें उन्होने विविध जीवन–सन्दर्भों का अनुभूति पूर्ण चित्रण किया है। जहाँ एक ओर हम रेणु को वर्ण–व्यवस्था, सामाजिक कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों

आदि पर प्रहार करते हुए तथा ग्राम्य जीवन में पुनर्जागरण का शंखनाद करते हुए देखते हैं, वहीं हिंसा और अहिंसा में भेद किये बिना मानव–मुक्ति के लिए वे संघर्षरत भी दिखाई देते है। सारांशतः, रेणु का सम्पूर्ण कथा–साहित्य मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का साहित्य. है।

उपन्यास और कहानी दोनों में रेणु आंचलिकता और ग्राम्यचित्रण के माध्यम प्रविष्ट हुए। अंचल का पूर्ण चित्रण ही उनकी कहानियों का मूल वर्ण्य विषय रहा है। ग्रामीण जीवन में पलने वाले अन्धविश्वास, रूढ़ियों, प्रथाओं, सामाजिक मान्यताओं, पर्वों, त्योंहारों आदि को विस्तार के साथ उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। ग्रामीण मिट्टी में जीते उनके पात्रों भूत–प्रेत, जादू–टोना आदि के प्रति प्रगाढ़ विश्वास है। अशिक्षा और अज्ञानता की धुन्ध के कारण उनके समक्ष नवीन चेतना को मार्ग भी दबा–ढँका–सा दिखाई देता है।

अपनी कहानियों में अन्धविश्वास के चित्रण द्वारा रेणु ने यह बताना चाहा है कि किसी प्रकार यह अन्धविश्वास सीधे–साधे ग्रामीणों की विकास में रूकावट है। रेणु द्वारा चित्रित गाँवो में यह अन्धविश्वास, झाड़–फूँक एवं भाग्यवाद चारों ओर फैला दिखाई देता है। 'मैला आँचल' के ज्योति खीजी, खलासीजी, सहदेव मिश्र आदि के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण अन्धविश्वास का ही चित्रण किया है। गाँव में अस्पताल खुलने को भीषण दुर्भाग्य का लक्षण बताते हुए ज्योतिखीजी गाँव में चील–गिद्ध के उड़ने और विनाश होने का भय लोगों को बताते हैं।

पार्वती की माँ हीरू के हाथों अमावस्या की अँधेरी रात में कत्ल कर दी जाती है, आँपरेशन से बच्चा निकालने के स्थान पर स्त्री की मौत की अच्छा समझा जाता है। भोज के समय काले धान की पूजा के बाद दो पुड़ियाँ भूत–पिशाच एवं देवों के लिए जंगल की ओर फेंक दी जाती है। रेणु की कहानी 'रसप्रिया' में पंचकौड़ी भिरदंगिया की अँगुली टेढ़ी हो गयी है, अंधविश्वासी मोहना चिल्ला कर कहता है – डायनं ने बान मान कर तुम्हारी अँगुली टेढ़ी कर दी है। झूठ क्यों कहते हो रसपिरिया बजाते समय।

''देखा नहीं, सुना है.....। राज कैसे गया, बड़ी हैफवाली कहानी है। सुनते हैं, घर में देवता ने जन्म ले लिया। कहिए भला, देवता आखिर देवता है ? है या नहीं । इन्द्रासन छोड़कर। मिरतू भुवन में जन्म ले ले तो उसका तेज कैसे सम्हाल सकता है कोई। सूरजमुखी फूल की तरह माथे के पास तेज खिला रहता लेकिन नजर का फेर किसी ने नहीं पहचाना।

ग्राम्य जीवन से जुड़ी रेणु की कहानियों में गाँव में व्याप्त 'जातिवाद' को भी अत्यन्त सूक्ष्म रूप से चित्रित किया गया है। कुछ गाँव तो ऐसे हैं जिनके टोलों के नाम भी जाति के आधार पर रखे जाते हैं। जैसे–कायस्थ पुरवा, दुसाध टोला, राजपूत टोला, यादव टोला, कोयरी टोला, बाभन टोला आदि जातियों के आधार पर पूरा गाँव विभिन्न दलों में बँटा हुआ हैं। प्रत्येक जाति की अपनी नियति है और

अपना उसूल। 'संवादिया' की बड़ी बहुरिया 'लालपान के बेगम' की विरजू की माँ, उपेक्षित 'करमा' इसी जातिवादी व्यवस्था की उपज हैं। रेणु के पात्र अभिजात्य वर्ग से कम, सर्वहारा से सविशेष लिये गये है।

रेणु की कहानियों में चित्रित गाँवों में संकीर्ण स्वार्थ, मूर्खता और कलह का बोल–बाला है। छोटी–छोटी बातों को लेकर लोग अनायास लड़ते रहते है। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरों का अनहित करने में इन्हे थोड़ी भी शर्म नहीं। 'रसप्रिया' का भिरदंगिया, 'अच्छे आदमी' का 'उजागिर', 'एक आदिम रात्रि की महक' का 'करमा' भित्ति चित्र की मयूरी' का 'तोफा लाल'– सभी इसी ग्रामीण मूर्खता की देन है। 'गाँव के किसी के ऊपर कोई समस्या आई हो, किसी घर में कोई बुरी घटना घटी हो, बाप–बेटे में झगड़ा होता रहे अथवा कोई अपनी पत्नी को पीट रहा हो–सबसे पहले तोफा लाल ही हँसता हुआ घटना स्थल पर पहुँचता है।

लोगों को दुःख में देखकर अद्भुत आनन्द है उसको। घोर दीनता में जीते इन ग्रामीणों को शहरी पलायन को चित्रित करते हुए 'विघटन के क्षण में रेणु लिखते हैं–'अरजुन मिशिर और गेंदा झा की बात कहती हो मौसी? मै पूछती हूँ गाँव में ये दोनों करते ही क्या हैं? बिलल्ला होकर इसके दरवाजे से उसके दरवाजे पर खैनी चुनियाते और दाँत निपोड़ कर भीख माँगते दिन काटते थे। अब शहर में जाकर होटल में भात राधते हैं दोनों। पिछले महीने अरजुन मिसिर आया था । अब बटुआ में पनडिब्या और सूरती रखता है। तोंद निकल गया है।'

'तो तू भी रामफल को क्यों नहीं भेज देती? तोद निकल जायेगा' गाँव में व्याप्त भ्रष्टाचार, योनाचार एवं कामुकता आदि को भी उजागर करने का श्रेय रेणु की कहानियों को है। 'आत्मसाक्षी' की परवतिया', 'एक आदिम रात्रि की महक' की 'सरसतिया', 'रोमांस शून्य प्रेम कथा'..... की 'पवित्रा', 'अच्छे आदमी' की 'प्रदीप कुमार की माय' जैसे कई जगह चरित्रों में रेणु ने इन्ही कामजन्म कुण्ठाओं को अभिव्यक्ति दी है।

आंचल में भी लक्ष्मी कोठारिन और अंधा महन्त सेवादास, रामदास और लक्ष्मन, लक्ष्मी और बलदेव, डॉ० प्रशान्त और कमला, कालीचरन और मंगला, फुलिया और खलासीजी आदि चरित्रों के माध्यम से रेणु ने उसी यौनाचार और कामुकता व्यक्त किया है। अशिक्षा और विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के बीच जीते रेणु के ग्रामीण पात्र बड़े भोले–भाले दिखाई देते हैं। आर्थिक रूप से रेणु के गाँव अत्यन्त पिछड़े हैं। शोषण से कुचक्र में पिसते हुए से लोग आम की गुठली और बथुए के साग पर भी गुजारा कर लेते हैं। वस्तुतः महान् है यह सन्तोष जिसके सहारे ये वर्ग जी रहा है। आखिर वह कौन से कठोर विधान हैं जिसने हजारों व्यक्ति को अनुशासन में बाँध रहा है ?.... कफ से जकड़े दोनों फेफड़े, ओढ़ने को वस्त्र नहीं, सोने की चटाई नहीं, पुआल भी नहीं। भीगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है,

जी जाता है ..... सात माह के बच्चे बथुए के साग पर पलते हैं और तेल लगाना स्वर्गीय सुख में गणनीय है।

गाँव की दशा यह है कि बेपरदा तो पूरा गाँव है .... कपड़ा अब कहाँ है ? रिजर्व में भी नहीं है शिरिफ कफन और सराध का कपड़ा है.....। उसी में से देंगे ? इतना ही नहीं, कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। औरते आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं, बारह–बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं। कितनी कारूणिक दशा है। ग्रामीण जीवन पर आधारित अपनी अधिकांशतः कहानियों में रेणु ने गाँव की उसी गरीबी को व्यक्त करने की चेष्टा की है। लाल पान की बेगम के दो नन्हें पात्र बिरजू और चम्पिया गिनती के शकरकन्दों और टपकते हुए गुड़ को भी ललचाई दृष्टि से देखते हैं– बिरजू बीती हुई बातों को भूलकर उठ खड़ा हुआ था और धूल झाड़ते हुए बरतन से टपकते गुड़ को ललचाई निगाहों से देखने लगा था। दीदी के साथ वह दुकान भी जाता तो दीदी उसे भी गुड़ चटाती...। ये मइया, एक अँगुली गुड़ दे दे। बिरजू ने तरहथी फैलाई–दे न मइया, इक रत्ती भर।

इस प्रकार हम देखते है कि फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में ग्राम्य जीवन के विविध सन्दर्भ की भूमि पर उकेरे गये हैं। विडम्बनाओं और विकृतियों से भरा रेणु का यह ग्रामीण समाज स्थान–स्थान पर टूटता–बिखरता दिखाई देता है। रेणु का कथाकार उन पड़ती हुई दरारों में थिगड़े लगाने का पक्षधर नहीं है। गाँव की सारी कुरूपता, समाज की इस सारी विकृति को वह जला देना चाहता है। वह देख रहा है–गुलमोहर का अग्निदग्धा पुष्प क्रान्ति–सा प्रतीक बन कर खिला है। विकृत और विडम्बनापूर्ण ग्राम्य परिवेश में लेखक आमूल–चूल परिवर्तन चाहता है। चूँकि ये समस्याएँ मानव जन्म है अतः इसका समाधान भी मनुष्य ही कर सकता है अथवा रानीडिह जैसे गाँवो की तर्ज पर चित्रित नहीं है।

देश की आजादी के बाद आंचलिक कथाकारों ने किसी क्षेत्र या क्षेत्र विशेष के किसी गाँव को सविस्तार तथा ब्यौरे के साथ चित्रित करना आवश्यक समझा। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् राष्ट्र निर्माण और पुनरूत्थान की वृहद योजना बनी। विकास की किरण को भोली–भाली ग्राम्य जनता तक पहुँचाने के लिए प्रखण्ड विकास कार्यालय खोले गये। कहने का अर्थ यह कि स्वाधीनता के पश्चात् हमारी चिन्ता का विषय विकास और प्रकाश हो गया। परिणामतः हिन्दी साहित्य में भी ऐतिहासिक उपन्यासों और कहानियों का लेखन क्रमशः क्षीण होता गया। रेणु की प्रथम कथा कृति मैला आँचल इसी काल में लिखी गयी। देश की एक निश्चित भौगोलिक इकाई का वर्णन परिधि में रखकर रेणु ने उस अवधि के राष्ट्र–चिन्तन तथा विकास परक योजनाओं के क्रियान्वयन का वस्तु–मूलक वर्णन किया। लेखक होने के साथ–साथ रेणु एक राजनीतिक कार्यकर्ता भी थे।

सामाजिक समस्याओं की जैसी गहरी पकड़ रेणु के कथा–साहित्य में है, अन्यत्र दुर्लभ है। रेणु की कहानियों में मिट्टी का दर्द अत्यधिक मुखर है। इसका कारण सम्भवतः यही है कि वे अपनी मिट्टी से अपने अंचल और गाँव से दोहरे स्तर पर जुड़े हैं–लेखक के रूप में तथा राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में वे शुरू से अन्त तक पूर्णिया की जमीन से जुड़े रहे। बीच में लेखक के रूप में ख्याल होने पर उन्हें पटना, इलाहाबाद आदि रहना पड़ा और इनके लेखन में शहर का एक विशिष्ट अनुपात बनने लगा, तो फिर चुनाव के बहाने या और किसी विधि से उन्होने बार–बार अपने को अपने गाँव और क्षेत्र से जोड़ने की पुरजोर और ईमानदार कोशिश की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. मेरी प्रिय कहानियाँ, फणीश्वरनाथ रेणु
2. मैला आंचल, फणीश्वरनाथ रेणु
3. रसप्रिया, फणीश्वरनाथ रेणु
4. तीसरी कसम अर्थात् मारे गये गुलफाम, फणीश्वरनाथ रेणु
5. भित्ति चित्र की मयूरी, फणीश्वरनाथ रेणुं
6. विघटन के क्षण, फणीश्वरनाथ रेणु
7. अच्छे आदमी फणीश्वरनाथ रेणु चुनी हुई रचनांए
8. लाल पान की बेगम फणीश्वरनाथ रेणुए मेरी प्रिय कहानियाँ
9. विपक्ष जुलाई 1991 लेख श्यामसुन्दर दास
10. विघटन के क्षण, फणीश्वरनाथ रेणु